



लोक सभा सचिवालय
प्रेस एवं जन सम्पर्क स्कंध
संसद भवन, नई दिल्ली
LOK SABHA SECRETARIAT
Press and Public Relations Wing
Parliament House, New Delhi

प्रेस विज्ञप्ति PRESS RELEASE

देशवासियों को अपने दैनिक जीवन में स्वतन्त्रता सेनानियों की महान आदर्शों पर चलने के लिए स्वयं को पुनः समर्पित करना चाहिए : भारत के राष्ट्रपति / CITIZENS SHOULD REDEDICATE THEMSELVES TO FOLLOW GREAT NATIONAL IDEALS OF FREEDOM FIGHTERS IN THEIR DAILY LIVES: PRESIDENT OF INDIA

...

विधानमंडलों में संवाद और विचार विमर्श होना चाहिए और व्यवधान उत्पन्न करके उन्हें निष्क्रिय नहीं बनाया जाना चाहिए : भारत के उप राष्ट्रपति / LEGISLATURES MUST BE GUIDED BY 'DIALOGUE AND DEBATE' AND THEY MUST NOT BE RENDERED DYSFUNCTIONAL THROUGH PERSISTENT DISRUPTIONS: VICE-PRESIDENT OF INDIA

...

विधानमंडलों में लोगों के जनादेश के प्रति सहिष्णुता की भावना हो : भारत के उपराष्ट्रपति / TOLERANCE TOWARDS MANDATE OF THE PEOPLE SHOULD BE GUIDING SPIRIT FOR THE LEGISLATURES: VICE-PRESIDENT OF INDIA

...

संविधान दिवस इसलिए मनाया जाना चाहिए ताकि हम हमारा रास्ता सही है या नहीं, इसका निरंतर मूल्यांकन कर सकें : प्रधान मंत्री / CONSTITUTION DAY SHOULD BE CELEBRATED BECAUSE OUR PATH SHOULD CONSTANTLY BE EVALUATED: PRIME MINISTER

...

हमारे संविधान की भावना हम सबको जोड़ती है : लोक सभा अध्यक्ष/ SPIRIT OF OUR CONSTITUTION UNITE ALL OF US TOGETHER: LOK SABHA SPEAKER

...

संसद संवाद और चर्चा का मंच है न कि व्यवधान का : श्री बिरला / PARLIAMENT IS THE FORUM FOR DIALOGUE AND DISCUSSION AND NOT DISRUPTION: SHRI OM BIRLA

...

सभा की गरिमा और मर्यादा की रक्षा करना हमारा सामूहिक दायित्व है : श्री बिरला/ IT IS OUR COLLECTIVE RESPONSIBILITY TO PRESERVE AND PROTECT THE DIGNITY AND DECORUM OF THE HOUSE: SHRI BIRLA

...

संसद भवन के केन्द्रीय कक्ष में संविधान दिवस मनाया गया / 'SAMVIDHAN DIVAS' CELEBRATED IN THE CENTRAL HALL OF PARLIAMENT HOUSE.

...

नई दिल्ली 26 नवंबर 2021: भारतीय संसदीय समूह (आईपीजी) के तत्वावधान में 'संविधान दिवस' के उपलक्ष्य में आज संसद भवन के केन्द्रीय कक्ष में एक समारोह का आयोजन किया गया। भारत के माननीय राष्ट्रपति, श्री राम नाथ कोविंद; भारत के माननीय उपराष्ट्रपति, श्री एम वेंकैया नायडु; भारत के माननीय प्रधान मंत्री, श्री नरेंद्र मोदी; लोक सभा के माननीय अध्यक्ष, श्री ओम बिरला और अन्य गण्यमान्य व्यक्तियों ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई और विशिष्ट अतिथियों को संबोधित किया।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए भारत के राष्ट्रपति, श्री राम नाथ कोविंद ने कहा कि संसद की गरिमा की रक्षा में संसद के सभी सदस्य शामिल हैं। ग्राम सभा से लेकर संसद के निर्वाचित प्रतिनिधियों की केवल एक प्राथमिकता होनी चाहिए – सभी

लोगों के कल्याण के लिए और राष्ट्र हित में कार्य करना। उन्होंने यह भी कहा कि विचारधारा में मतभेद हो सकते हैं लेकिन कोई भी मतभेद इतना बड़ा नहीं होना चाहिए कि वह जन सेवा और जन कल्याण के वास्तविक उद्देश्य में बाधा बने। प्रतिस्पर्धा को प्रतिद्वंद्विता नहीं समझा जाना चाहिए।

वाद-विवाद के डिजिटल संस्करण, संविधान के सुलेखित संस्करण के विमोचन और संवैधानिक लोकतन्त्र के बारे में ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी के शुभारंभ के बारे में टिप्पणी करते हुए राष्ट्रपति जी ने कहा कि संविधान सभा की चर्चाओं में राष्ट्र निर्माण के लिए मानवीय चिंतन और चेतना की पराकाष्ठा के दर्शन होते हैं। इस बात पर संतोष व्यक्त करते हुए कि लोग आज़ादी का अमृत महोत्सव के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में देश भर के लोग बढ़चढ़ कर भागीदारी कर रहे हैं। राष्ट्रपति जी ने कहा कि उनके उत्साह से यह प्रकट होता है कि उनके हृदय में उन ज्ञात और अज्ञात स्वतन्त्रता सेनानियों के प्रति गहरा सम्मान है जिनके त्याग और बलिदान के फलस्वरूप हमारे लिए आज़ादी की खुली हवा में सांस लेना संभव हो सका है। राष्ट्रपति जी ने देशवासियों से संविधान दिवस के अवसर पर अपने दैनिक जीवन में उन महान आदर्शों पर चलने के लिए स्वयं को पुनः समर्पित करने का आह्वान किया।

भारत के उपराष्ट्रपति और राज्य सभा के सभापति, श्री एम. वेंकैया नायडु ने अपने संबोधन में कहा कि संविधान मूल्यों, विचारों और आदर्शों की अभिव्यक्ति है और इस बात पर ज़ोर दिया कि सभी देशवासियों और हितधारकों को देश के प्रति प्रतिबद्धता और उत्साह की भावना के साथ कार्य करना चाहिए।

श्री नायडु ने इस बात पर ज़ोर दिया कि भारत के संविधान की यही भावना है कि पूरे देश के विधानमंडलों विशेष रूप से संसद में 'संवाद और विचार-विमर्श' होना चाहिए और

निरंतर उत्पन्न किए जाने वाले व्यवधानों से उन्हें निष्क्रिय नहीं बनाया जाना चाहिए। उन्होंने संसद की कार्य-उत्पादकता में लगातार आ रही गिरावट पर भी चिंता व्यक्त की।

इस बात पर जोर देते हुए कि लोकतंत्र में, लोगों की इच्छाएँ उस समय की सरकार के लिए जनादेश के समान हैं, श्री नायडु ने जोर देकर कहा कि "लोगों के जनादेश के प्रति सहिष्णुता विधानमंडलों के लिए मार्गदर्शी भावना होनी चाहिए"।

यह टिप्पणी करते हुए कि भारत का संविधान समय की कसौटी पर खरा उतरा है, श्री नायडु ने कहा कि इस पावन दस्तावेज़ की भावना और गरिमा की रक्षा के लिए सभी संभव प्रयास किए जाने चाहिए।

प्रधान मंत्री, श्री नरेंद्र मोदी ने बाबासाहेब डॉ भीम राव अंबेडकर और डॉ राजेंद्र प्रसाद को नमन किया और संविधान निर्माण में उनके योगदान का उल्लेख किया। उन्होंने महात्मा गांधी और स्वतंत्रता आंदोलन में बलिदान देने वाले सभी गुमनाम नायकों को भी नमन किया। प्रधान मंत्री जी ने उन शहीदों के अदम्य साहस और बहादुरी को भी याद किया, जिन्होंने 26/11 के मुंबई आतंकी हमले के दौरान राष्ट्र की रक्षा करते हुए अपना जीवन बलिदान कर दिया।

श्री मोदी ने आगे कहा कि संविधान अनेक धाराओं का संग्रह मात्र नहीं है, हमारा संविधान सहस्र वर्षों की महान परंपरा है। यह उस अखंड धारा की आधुनिक अभिव्यक्ति है। उन्होंने यह भी कहा, "संविधान दिवस मनाया जाना चाहिए क्योंकि हमारा जो रास्ता है, वह सही है या नहीं है, इसका मूल्यांकन किया जाना चाहिए। "

‘संविधान दिवस’ मनाने के पीछे निहित भावना पर प्रकाश डालते हुए प्रधान मंत्री जी ने कहा कि बाबासाहेब अंबेडकर की 125वीं जयंती थी, हम सबको लगा कि इससे बड़ा पवित्र अवसर क्या हो सकता है कि बाबासाहेब अंबेडकर ने जो इस देश को नजराना दिया है, उसको हम हमेशा एक स्मृति ग्रंथ के रूप में याद करते रहें। “

उन्होंने कहा कि अच्छा होता कि 26 जनवरी को गणतन्त्र दिवस की परंपरा के साथ ही 26 नवम्बर को संविधान दिवस के रूप में मनाए जाने की परंपरा उसी समय स्थापित कर दी जाती।

भ्रष्टाचार का दोष सिद्ध होने की बात भूलकर ऐसे व्यक्तियों का महिमामंडन किए जाने की प्रवृत्ति के बारे में आगाह करते हुए प्रधान मंत्री जी ने कहा कि ऐसे लोगों को खुद में सुधार लाने का अवसर देते हुए हमें सार्वजनिक जीवन में उन्हें महिमामंडित करने से बचना चाहिए। महात्मा गांधी का स्मरण करते हुए प्रधान मंत्री जी ने कहा कि महात्मा गांधी ने आजादी के आंदोलन में अधिकारों के लिए लड़ते हुए भी, देश को कर्तव्यों के लिए तैयार करने की कोशिश की थी। अच्छा होता अगर देश के आजाद होने के बाद कर्तव्य पर बल दिया गया होता। श्री मोदी ने कहा “आजादी का अमृत महोत्सव में हमारे लिए आवश्यक है कि कर्तव्य के पथ पर आगे बढ़ें ताकि अधिकारों की रक्षा हो”।

इससे पहले इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए, लोक सभा अध्यक्ष, श्री ओम बिरला ने कहा कि संविधान हमारी महान सांस्कृतिक विरासत, शाश्वत मूल्यों एवं आदर्शों का पवित्र ग्रंथ है। यह हमारे अधिकारों का स्रोत है, जो हमें हमारे दायित्वों का बोध भी कराता है। भारत के संवैधानिक मूल्यों का वर्णन करते हुए, श्री बिरला ने कहा कि संविधान एक भावना है जो हमें जोड़ने की ताकत देती है। उन्होंने यह भी कहा कि संविधान जनता की आशाओं, अपेक्षाओं और उम्मीदों को पूर्ण करने का मार्ग दिखाता है।

यह देशवासियों को निरंतर कर्म करने की प्रेरणा देता है और राष्ट्र के प्रति उनके कर्तव्यों का बोध भी कराता है। देशवासियों के कर्तव्यों पर बल देते हुए, श्री बिरला ने कहा कि संविधान दिवस स्वयं को राष्ट्र हित में कर्तव्य पथ पर पुनः समर्पित करने का दिन है।

श्री बिरला ने कहा कि संसद 135 करोड़ जनता का प्रतिनिधित्व करती है। यह टिप्पणी करते हुए कि यह संवाद और चर्चा का मंच है न कि व्यवधान का, श्री बिरला ने कहा कि चर्चा, संवाद, चिंतन मनन से जो अमृत निकलेगा उससे ही आमजन के जीवन में सार्थक बदलाव लाया जा सकता है और समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को लाभ पहुंचाया जा सकता है। श्री बिरला ने कहा कि इस पावन दिवस पर देशवासियों को अपने कर्तव्यों और दायित्वों के निर्वहन और लोकतान्त्रिक संस्थाओं के माध्यम से नए राष्ट्र के निर्माण में योगदान करने का संकल्प लें।

भारत के राष्ट्रपति ने इस समारोह के दौरान

- i. संविधान सभा वाद-विवाद के डिजिटल संस्करण
- ii. भारत के संविधान की सुलेखित प्रति के डिजिटल संस्करण
- iii. भारत के संविधान के अद्यतन संस्करण का विमोचन किया।

भारत के राष्ट्रपति ने संवैधानिक लोकतन्त्र के बारे में ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी का शुभारंभ भी किया।

देशवासियों ने राष्ट्रपति जी के साथ संविधान की उद्देशिका का पाठ किया।

संसद सदस्यों के साथ ही, दिल्ली स्थित आईपीजी के एसोसिएट सदस्य और दिल्ली स्थित मिशन प्रमुख भी इस समारोह में शामिल हुए।

New Delhi, 26 November, 2021: To commemorate the 'Samvidhan Divas' under the auspices of Indian Parliamentary Group (IPG), a function was organised in the Central Hall of Parliament House, today. Hon'ble President of India, Shri Ram Nath Kovind; Hon'ble Vice-President of India, Shri M. Venkaiah Naidu; Hon'ble Prime Minister of India, Shri Narendra Modi; Hon'ble Speaker, Lok Sabha, Shri Om Birla, and other dignitaries graced the occasion and addressed the distinguished gathering.

Speaking on the occasion, the President of India, Shri Ram Nath Kovind said that Members are defenders of the dignity of Parliament. Elected representatives from the Gram Sabha, to the Parliament should have only one priority which is working for the welfare of all the people and the interest of the nation, asserted the President. He further added that there may be differences of opinion, but no difference should be so great as to hinder the real purpose of public service and people's welfare. Competition in Parliament should not be confused with rivalry.

Speaking about the release of digital version of the debates, calligraphed version of the Constitution and updated version of the Constitution as well as launch of online quiz on constitutional democracy, the President said that in the Constituent Assembly debates we get glimpses of the greatness of human thought and consciousness channelled toward nation building. Expressing satisfaction that people are enthusiastically participating in the series of programmes organized as part of 'Azadi Ka Amrit Mahotsav', the President said that this speaks of the active participation of citizens that they carry within their hearts, deep respect for those known and unknown freedom fighters whose sacrifices made it possible for us to breathe the air of freedom. The President urged the citizens to rededicate themselves to follow those great national ideals in their daily lives.

Vice – President of India and Chairman, Rajya Sabha, Shri M. Venkaiah Naidu in his address, stated that the Constitution is a statement of values, ideas and ideals and underlined that all Indians are part of one community and that all citizens and stakeholders must work with a spirit of commitment and passion for the nation. Shri Naidu asserted that the spirit of the Constitution of India requires that legislatures across the nation especially the Parliament must be guided by 'dialogue and debate' and they must not be rendered dysfunctional through persistent disruptions. He also expressed concern about the steady decline in the productivity of the Parliament over the years. Emphasising that in a democracy, the people's will is conveyed as the mandate to the Governments of the day, Shri Naidu said that "Tolerance towards the mandate of the people should be the guiding spirit for the legislatures". Stating that the Constitution of India has stood the test of time, Shri Naidu said that every effort should be made to protect the spirit and dignity of the sacred document.

Prime Minister, Shri Narendra Modi paid tributes to Babasaheb Dr. Bhim Rao Ambedkar and Dr. Rajendra Prasad and remembered their contributions in framing of the Constitution. He also paid tributes to Mahatma Gandhi and all the unsung heroes who made sacrifices during the freedom movement. The Prime Minister also remembered the indomitable courage and bravery of the martyrs who made the ultimate sacrifice defending the nation during the Mumbai terror attacks of 26/11.

Shri Modi further said that Constitution is not just a collection of many articles, our constitution is a great tradition of millennia. This is a modern expression of that unbroken stream. He further said, "Constitution Day should be celebrated because our path should constantly be evaluated whether it is right or not." Elaborating on the spirit behind celebrating the 'Constitution Day', the Prime Minister said that it was during the 125th birth anniversary of Babasaheb Ambedkar, "we all felt that what could be a greater auspicious occasion than the gift that Babasaheb Ambedkar had given to this country, we should always

remember his contribution in the form of a Smriti Granth". He said it would have been better if along with establishing the tradition of Republic Day on 26th January, 'Constitution Day' was also celebrated on 26th November at that time itself.

Cautioning against the tendency of forgetting and glorifying convicted corrupt people, the Prime Minister said that while giving an opportunity to reform we should refrain from glorifying such people in public life. Remembering Mahatma Gandhi, the Prime Minister said that Mahatma Gandhi had tried to prepare the nation for the duties, even while fighting for the rights in the freedom movement. "It would have been better if the duty had been emphasized after the country's independence. In the Azadi ka Amrit Mahotsav, it is necessary for us to move forward on the path of duty so that our rights are protected", Shri Modi said.

Earlier, speaking on the occasion, Lok Sabha Speaker Shri Om Birla said that the Constitution as embodiment of cultural heritage, eternal values and ideals of the country, is the source of the rights of the people of the country, which also gives us a sense of our obligations. Describing the constitutional values of India, Shri Birla said that the spirit of our Constitution unite all of us together. He further said that the Constitution is the guiding spirit for fulfillment of the hopes and aspirations of the people. It inspires citizens to work continuously and also makes them aware of their duties towards the nation. Emphasizing on citizens' duties, Shri Birla stressed that Constitution Day is the occasion to rededicate ourselves on the path of duties in national interest.

Shri Birla said that Parliament represents the will of 135 crore people of the country. Observing that it is the forum for dialogue and discussion and not disruption, Shri Birla said that the nectar that will come out of the discussion and dialogue will bring prosperity and positive change in the lives of the people, benefiting the last man standing in the row. On the Amrit Mahotsav being

celebrated on the occasion of 75 years of independence of the country, Shri Birla said that on this sacred day, the people of India should take a pledge to discharge their duties and responsibilities strengthening democratic institutions, to create a new India.

President of India released the following resources during the function:

- i. Digital version of Constituent Assembly Debates
- ii. Digital version of Calligraphed copy of Constitution of India
- iii. Updated Constitution of India

President of India also inaugurated 'Online Quiz on Constitutional Democracy'.

The Nation read the Preamble along with the President.

Apart from Members of Parliament, the Associate Members of IPG based in Delhi and the Head of Missions based in Delhi participated in the Function.